Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.38, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2019, VOL- 7/55

लोकसाहित्य तथा लोकसंस्कृति का समीक्षात्मक अध्ययन

रमेश एस. जगताप, Ph. D.

असो. प्रोफेसर, ज्ञाम विज्ञास संस्था, आर्टस् महाविद्यालय, बामखेडा, ता. शहादा जि.नंदुरबार

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

हमारा देश विशाल संस्कृतियों का मिला जुला रुप है | जिसमें विशाल जाति जनजातियाँ शामिल है | हर प्रदेश में हरेक जाति अपनी लोकसंस्कृति और लोककला को जीवित रखी हुयी है | लेकिन वह उतनी मात्रा में भारतीय जनमानस तक नहीं पहुँच पायी है, क्योंकि आज भी विभिन्न बोलियों और संस्कृतियों पर शोधकार्य नहीं हो सका तथा उस पर प्रभाव डालने वाली अन्य बोलियाँ, उनकी बोलनेवालों की जन-संख्या आदि का जायजा लेना आवश्यक है | वैसे भारत यह गांवों में बसता है | शहरों से अधिक संख्या गांवों की है | शहर और ग्राम्य की अलग-अलग संस्कृतियाँ तथा लोकजीवन है | भारतीय लोक साहित्य के संदर्भ में डॉ. महेंद्र रघुवंशी लिखते हैं- "लोक की अपनी एक परम्परा होती है और उस परम्परा के कारण ही लोक जीवन क्रियाशील रहता है | भारतीय लोक जीवन इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है | भारतीय लोक जीवन ग्रामों और नगरों दोनों में ही लोक संस्कारों जैसे तीज त्यौहार व्रत उपवास आदि से सम्बध होकर लोक के यथार्थ रुप को प्रकट करता है |"[१] स्पष्ट है कि लोक शब्द बडे प्राचीन काल से प्रयोग में आता रहा है और उसका मूल अर्थ मनुष्य जीवन से ही है | बौध्द भक्त अशोक के शिलालेखों के 'लोक' का प्रयोग समस्त प्रजाजनों के हित में हुआ है | भरत मुनि भी मानते हैं कि नाटक पुरे मनुष्य के ल्याज के लिए हो | डॉ. रविंन्द्र भ्रमर इस बारें में लिखते हैं- "एक जो विश्व अथवा समाज और दूसरा जनसामान्य अथवा जन साधारण | साहित्य अथवा संस्कृति के एक विशिष्ट भेद की ओर इंगित करनेवाले एक आधुनिक विशेषण के रुप में इस शब्द का अर्थ ग्राम्य या जनपदीय समझा जाता है | किन्तु इस दृष्टि से केवल गावों में ही नहीं वरन नगरों, जंगलों पहाडों और टापुओं में बसा हुआ वह मा-नव समाज, जो अपने परम्परा प्रथा रीति रिवाजों और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने के कारण अशिक्षित अल्प सभ्य कहा जाता है, लोक का प्रतिनिधित्व करता है |"[२]

हजारी प्रसाद त्रिवेदी भी कुछ इसी प्रकार लोक की व्याख्या करते हैं- "लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं है | बल्कि नगरों और गाँवों में फैली हुई वह समूची जनता है जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है | ये लोग नगर में परिष्कृत जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रुचिवाले लोगों की समूची विलासिता उत्पन्न करते हैं |"[३]

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

डॉ. श्याम परमार भी लोक ज्ो इस प्रकार बयान करते हैं- लोक साधारण जन समाज है जिसमें भू-भाज फैले हुए समस्त प्रकार के मानव सम्मिलित हैं | यह शब्द वर्ग भेद रहित व्यापक एवं प्राचीन परम्पराओं की श्रेष्ठ राशि सहित अर्वाचीन सभ्यता, संस्कृति के कल्याणमय विकास का द्योतक है | भारतीय समाज में नागरिक एवं ग्रामीण दो भिन्न संस्कृतियों का प्रायः उल्लेख किया जाता है किन्तु लोक दोनों संस्कृतियों में विद्यमान है | वही समाज का गतिशील अंग है | आधुनिक साहित्य का नवीन प्रवृत्तियों में 'लोक' का प्रयोग गीत, वार्ता, कथा, संगीत, साहित्य आदि से युक्त होकर साधारण जन समाज, जिसमें पूर्व संचित परम्पराएँ, भावनाएँ विश्वास और आदर्श सुरक्षित है तथा जिसमें भाषा और साहित्यगत सामग्री ही नहीं, अपितु अनेक विषयों के अनजढ ठोस रत्न छिपे हैं, के अर्थ में होता है |"[४]

तथा लोक संस्कृति और लोक साहित्य के विद्वान आचार्य डॉ. नन्दलाल कल्ला की दृष्टि में लोक विशुध्द, व्यापक विराट विस्तृत सर्व व्यापक, सार्वकालिक सार्वदेशिक तथा परम्परानुमोदित मानसिकता है, जो ज्ि सी शास्त्रीय अथवा अभिजात्य संस्कारों तथा पाण्डित्य की लक्ष्मणरेखा में बध्द नहीं है, लोक अनलंकृत है, अकृत्रिम है, इसीलिए पुरातन होते हुए भी चिर नवीन रहता है | स्वाभाविकता इसकी पहचान है | सहजोद्रेकता इसका धर्म है और सरलता इसका स्वभाव और सर्व भवन्तु सुखितः का संकल्प इसकी आत्मा है |"[५] किन्तु पं. विद्यानिवास मिश्र की लोक को देखने की अपनी दृष्टि है वे कहते है- "लोक का ही एक आनुभविक रुप है | लोक शब्द की व्युत्पत्ति रुच/लुच से है, जिसका अर्थ प्रकाशित होना है और प्रकाशित करना भी है जो सामने प्रकाशित होना है और प्रकाशित करना भी है जो सामने प्रकाशित दिख रहा है, जो प्रकाशित कर रहा है | इसके सजातीय शब्द है | आलोक, लोचन (आँख), आलोचना (अच्छी तरह देख कर विवेचन करना) रोचन (प्रकाशमान सुन्दर, शोभन इसलिए प्रीतिकर, प्रीतिकर सन्देश, सन्तांनोत्पत्ति का संदेश, इसी से सम्बध्द फारसी का रोशन और रोशनी है) अवलोन प्रत्यालोकन (पीछे की तरफ देखना) लौकिक दृश्य (व्यवहार के अर्थ में) लोकोत्तर (लोक में रहते हुए लोक से ऊपर उठने वाला) लोकायत (ऐसा मत जो प्रत्यक्ष को प्रमाण मानता हो) इस शब्द से सम्बध्द अनेक शब्द युरोप की भाषाओं में है जिनमें यह अर्थ सूत्र की तरह व्याप्त है |

इस प्रकार लोक अपने से विशाल अर्थक्षेत्र समेटता है | जो भी दृष्टिगत संसार है अथवा जो भी दृष्टि गोचर संसार है वह लोक है | इस लोक का अर्थ है- जो यहाँ है, जो प्रस्तुत है | लोक का विस्तृत अर्थ है- जो यहाँ है, जो प्रस्तुत है | लोक का विस्तृत अर्थ है- लोक में रहने वाले मनुष्य अन्य प्राणी और स्थावर संसार के पदार्थ, क्योंकि यह सब भी प्रत्यक्ष अनुभव के विषय है | लोक के अर्थ का और विस्तार ज्रते हैं तो लोक व्यवहार, लोक के द्वारा स्वीकृत व्यवहार या आचार लोक के इस अर्थ लोक के इस अर्थ को ही लाक्षणिक रुप में लेते हुए हम कहते हैं ज्ि तीन लोक-भूलोक (पृथ्वीलोक) भुवलोंक (आन्तरिक्ष) और स्वर्लोक (द्युलोक) इन तीनों को त्रिलोकी कहते हैं | पृथ्वी

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जे उस पार को हम पाताल लोक या नागलोक या असुरलोक भी कहते हैं | इन सब प्रयोगों में यह अर्थ अभिव्याप्त है कि किसी सीमित और परिभाषित आकाश का नाम लोक है | यह लोक अवधारजा मात्र -नहीं यह ज र्मजेत्र है |

श्री कृष्ण जैसे अलौकिक चरित्र में भी आग्रह है कि मुझे भी लोकयात्रा पूरी करनी है | यदि मैं न करुँ तो यह लोक नष्ट हो जाय | लोक संग्रह के पथपर ज्ञा-नी से ज्ञा-नी, विदेह से विदेह को अपने लिए नहीं, लोक के लिए चलना पडता है | जीवन की सार्थकता इसी में है कि यस्मान्नेद्विजते लोको लोकान्ने द्विजते च यः | उससे लोक उद्विग्न न हो और वह स्वयं लोक से उद्विग्न न हो | इसीलिए इसे असिधाराव्रत कहा गया है | इसी लोक के भीतर से होज र लोकोत्तर की राह जाती है |[६] स्पष्ट है कि पं. विद्यानिवास मिश्र जीने लोककी बडी व्यापक व्याख्या ज ी है तथा संपूर्ण मानव और मानवेतर प्राणियों के बारें में सोचा है | जिसे हम समस्त प्राणिमात्र के कल्याण की भावना उसमें समाविष्ट हो | डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल इसी प्रकार लोक को ऑकने की कोशिश करते हैं वे कहते हैं- "लोज हमारे जीवन का महासमुद्र है, जिसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है | लोक शब्द का अमर स्वरुप है | लोक कृत्सन ज्ञान और संपूर्ण अध्ययन में सब शास्त्रों का पर्यावसान है | अर्वचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्च प्रजापति है| लोक, लोक की सर्वभूत माता पृथ्वी और लोक व्यक्त रुप मानव, यही हमारे नये जीवन का अध्यात्मक शास्त्र है | लोक पृथ्वी और मानव इस त्रिलोक में जीवन का कल्याणात्मक रुप है |[७]

इन भी विद्वानों द्वारा लोक की व्याख्या की गई जिसमें तीनों लोकों से लेकर सभी जीवों की यात्रा होती है | लेकिन मनुष्य की सारी संस्कृतियाँ, खान पान, रहन सहन, उत्सव, त्यौहार या आनंदानुभूति को व्यक्त ज रनेवाली लोज यात्रा है |

लोकसाहित्य हमारी मनोभावना हमारे जीवन जीने की पध्दतियाँ, रीति रिवाज, रिश्ते नाते, राग प्रेम आदि को अभिव्यक्त करता है | डॉ. सुरेश जौतम लोकसाहित्य के बारे में लिखते हैं- "लोक साहित्य में खाना पीना, रहन सहन, चाल ढाल, व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्ध जैसे सास ससुर, ननद, भावज, देवर, जेठ आदि ज ा पारिवारिक विचार मंथन, अनुशासन या अतित से चले आ रहे प्रेम, द्वेष आपसी वैमनष्य या अनुराग, नोक झोंज, लुका छिपी, शिकायत, रुठना, मनाना, आदि अनेक ऐसे व्यापार है जो इस साहित्य की धरोहर है | वह चाहे लोक गीत हो या लोक कथाएँ, लोकगाथाएँ हो अथवा लोक नाट्य, लोक साहित्य का कोई भी रुप हो, सभी रुप विधाओं में लोकजीवन के रंग अपने पुरे निखार पर हम से सीधे संवाद ज रते हैं | स्पष्ट है कि इस पूरे लोक साहित्य में परिवार, ग्राम, शहर तथा देश की आत्मा बसती है | और पूरे लोकरंजन तरिके से हम उसका रसास्वादन करते हैं | साहित्य में केवल मनुष्य का जीवन ही केवल सम्मिलित नहीं होता तो प्रकृति भी अपना सारा सौंदर्य बिजेरती हैं जैसे "लोक साहित्य की इस धारा में हम प्रकृति के अपूर्व सौंदर्य के भी दर्शन करते हैं | लहलहाते खेत, खलिहान, नदी नाले, बावडी, पोखर, आदि की अपनी छटा होती है जो इस लोक साहित्य के माध्यम से मन को प्रफुल्लता देती है | यही

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नहीं हमारे अनेक ऐसे राष्ट्रीय त्यौहार हैं जिनका असली रुप लोक साहित्य में ही प्रकट होता है | साव-न ज ा महि-ना आते ही ससुराल में गई सौभाग्यवतियाँ अपना पीहर याद करने लग जाती है | वे सावन के झूले, वर्षा फुहारों ज ो याद करने लग जाती हैं | इसी प्रकार दीवाली, होली रक्षाबन्धन, तीज, दशहरा आदि त्यौहारों की गमक लोक साहित्य में मिलती है | लोकसाहित्य के द्वारा ही इन त्यौहारों, ऋतु पर्वों और प्राकृतिक उपकरणों की उपयोगिता सिध्द होती है | हमारे राष्ट्रीय सांस्कृतिक बीजमूलों की परिपुष्ट परंपरा लोकसाहित्य में ही सन्निहित है |"[९] वे आगे कहते है- "लोज साहित्य 'लोक' का साहित्य लोक चेतना का साहित्य, लोक मानस का साहित्य, लोक की संस्कृति का साहित्य, लोक के अनुभव जनित अनुभूतियों का साहित्य समाज की अनगीनत वार्ताओं का ऐसा साहित्य है, जिसके रचनाकारों ने कभी कृतिकार होने का विज्ञापन नहीं किया अपने अहम चैतन्यजन्य शास्त्रीय ज्ञान की चेतना ज े प्रचारित नहीं किया, जिसने लिखित अभिजात्य संस्कारों के रुप में व्यक्त होने की ऐषणा भी प्रकट नहीं की ऐसा सहज, सरल, नितान्त अनौपचारिक आडम्बर रहित साहित्य ही लोक साहित्य कहा जाता है |"[१०]

अत: इन विभिन्न लोकसाहित्य की व्याख्याओं तथा विवेचनाओं से स्पष्ट होता है कि लोकसाहित्य हमारे जीवन का अभिन्य अंग है | उसके बिना जीवन में रंग नहीं है | स्पष्ट है कि लोक साहित्य जीवन की अनुकृति है |

लोकसाहित्य से तात्पर्य है लोकद्वारा लोक का साहित्य | वैसे लोक साहित्य सभ्य समाज के बहुत निकट नहीं है | क्योंकि इसका मौखिक रुप ही कार्य करता है | हिन्दी साहित्य कोश में लोक साहित्य को इस प्रकार प्रकट ज ि या जया है- "वास्तव में लोक साहित्य वह मौलिक अभिव्यक्ति है जो भूले ही किसी व्यक्ति ने गढी हो पर आज जिसे सामान्य लोक समूह अपना ही मानता है और जिसमें लोक की युगयुगीन वाजी साधना समाहित रहती है और जिसमें लोकमानस प्रतिबिंबित रहता है |

इसी कारण जिसके किसी भी शब्द में रचनात्मक चैतन्य नहीं मिलता जिसका प्रत्येज शब्द प्रत्येक स्वर प्रत्येक लय और प्रत्येक लहजा सहज ही लोक का अपना है और उसके लिए अत्यंत सहज और स्वाभाविक है |[११] उसी प्रकार डॉ. सत्येन्द्र भी लोकसाहित्य को व्याख्यायित करते हैं- लोक साहित्य के अंतर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्ति आती है जिसमें आदिम मानव के अवशेष उपलब्ध हो, परंपरागत मौखिक क्रम से उपलब्ध बोली या भावागत अभिव्यक्ति हो जिसे किसी कारण कृति न कहा जा सके, जिसे श्रृति ही माना जाता हो, और जो लोक मानस की प्रवृत्ति में समायी हो | कृतित्व किन्तु वह लोक मानस तत्वों से युक्त हो कि उसके किसी व्यक्तित्व के साथ संबंध्द रहते हुए भी लोक उसे अपने ही व्यक्तित्व की कृति स्वीकार करे |[१२] स्पष्ट है कि लोक साहित्य प्राचीन परंपरा तथा मनुष्य के विकास सी तथा उसके जीवन की कहानी बयान करता है | इसे डॉ. कुदनलाल उप्रेती अपने विचारों से अधिक स्पष्ट करते है वे कहते हैं- "आदिम मानव के मस्तिष्क की सीधी तथा सच्ची अभिव्यक्ती ही लोकवार्ता तथा लोकसाहित्य है | लोक साहित्य लोक समूह द्वारा स्वीकृत व्यक्ति की परंपरागत मौखिक क्रम से प्राप्त

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वह वाणी है जिसमें लोक मानस संग्रहित रहता है |"[१३] इससे स्पष्ट होता है कि आदिम मनुष्य की आदिम जीवनकथा को स्मरण के रुप में लोक साहित्य संग्रहित रहता है |

लोक साहित्य मनुष्य जीवन का राग-विराग है क्योंकि लोक साहित्य में सुख भी है दुख भी है | लोक साहित्य के संदर्भ में पश्चिमी देशोंके विद्वान समीक्षकों भाषा वैज्ञानिकों ने अपने मत सिध्दान्त, विचार तथा शोध प्रकट किये हैं | जिसमें जॉन आब्रे और सर थामस ब्राउन ने इस पर शोध कार्य किया | जॉन ब्रॉन्ड ने भी मौखिक परंपरा का यापन जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है | और इसे स्वीकार किया | इस संदर्भ में कुछ महत्त्वपूर्ण विद्वानों की टिप्पणीयाँ यहाँ देना मैं आवश्यक मानता हूँ |

बॅरज म - शब्दों द्वारा अभिव्यक्त कला प्रकारों का अलिखित पारंपरिक रुप ही लोक साहित्य है |

बॉटकिन - आधुनिक समाज में चला आया परंपरागत अलिखीत अथवा लिखित सांस्कृतिक विशेष ही लोक साहित्य है |

स्पि-नोझा - मनुष्य मात्र ने युगों तक प्राप्त किया अनुभव एवं शिक्षा का सार रुप ही लोक साहित्य अथवा लौज्ि ज ज्ञा-न है |[१६]

जी.एम.फास्टर - लोक साहित्य लचीला शब्द है और उसके अन्तर्गत अलिखित अथवा मौखिक रुप के भाषाविष्कार का समावेश होता है |[१७]

जास्टर - लोक साहित्य लोक संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग है जिसकी रक्षा विचारपूर्वक की जाती है | वह लौकिक परंपरा का खजाना होता है | लोक जीवन का संग्राहक स्वरुप होकर वह कला तथा साहित्य का स्त्रोत है |[१८]

स्पष्ट है कि इन पाश्चात्य विद्वानों ने भी अलिखित और मौखिक परंपराओं को अभिव्यक्त करने की कला ज ो लोक साहित्य माना है |

मनुष्य जीवन का जितना विकास हुआ है उतना लोक साहित्य पनपता है | भारतीय जन मानस धर्म संप्रदाय तथा जाति उपजातियों में बंटा है | हरेक जाति उपजाति के धार्मिक कार्य, अनुष्ठान तथा त्यौहार, रहन-सह-न, जा-नपा-न है | इसलिए हर वर्ग अपने धर्म और कर्मनुसार अपना जीवन यापन करता है | उसी प्रकार प्रकृति भी हमारे जीवन पर काफी प्रभाव डालती है | कर्मकांड भी ऋतुओं के अनुसार किये जात हैं | सूर्य, चंद्रमा, ग्रह, तारे भी हमारे लिए पूजनीय है | सुर्य देवता चंद्र देवता की आज भी पूजा की जाती है | वैसे ही धरती माता भी शतकों से हमारे जीवन दायिनी है | हम कृषि प्रधान समाज में रहते हैं | जब कोई धान तैयार होता है तो उसकी पूजा किये बिना हम उसका सेवन नही करते |

वैसे ही मनुष्य अकेले जीवन यापन नहीं कर सकता उसे समाज तथा परिवार की आवश्यकता पडती है | भारतीय समाज भी पूरे परिवार में रहता है | पुराने जमाने से दादा, दादी, नाना, नानी की कहानियाँ तथा गीत आज भी

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बच्चे बडे चाव से सुनते आ रहे हैं | हमारे पूर्वजों की जो भी गाथाएँ हैं | उनका हम हमेशा स्मरण करते हैं | वीरकथाएँ आज भी उतनी ही रोचकता से सुनी और सुनायी जाती है | परिवारों की स्त्रियाँ विविध उत्सवों तथा त्यौहारों में जुशी के गीत गाती है | और परिश्रमी लोग अपना कोई भी कार्य करते समय अलग-अल टूटे फूटे गीत गुण-जुणाकर अपना श्रम परिहास करते हैं | इस पर श्याम परमार लिखते हैं- "लोक की अपरिमित शक्ति, साहस, मनोभाव, मान्यताएँ, विश्वास, रागद्वेष परंपरांए, टोने टोटज्े , अनुष्ठान, रीति रिवाज, गीत-कथाएँ वेशभूषा आदि संयुक्त रुप से लोकवार्ता के चेतना अस्तित्व की घोषणा करते हैं | लोकवार्ता प्राचीन अवशेष मान रुढियों का अध्ययन ही प्रस्तुत नही ंकरता वरन जीवित लोकभावों, लोकभिव्यक्तियों एवं उनकी प्रवहमान प्रक्रियाओं का अध्ययन भी करता है |[१९]

स्पष्ट है कि हमारे जीवन के सभी रंगों का विस्तार लोक साहित्य में होता है उसी प्रकार सत्यव्रत अवस्थी भी लोक साहित्य के विस्तार के बारें में लिखते हैं- "लोक जीवन की छाया में लोकवार्ता शास्त्र के तत्व संघटित होते हैं | सामान्य जन में व्याप्त समस्त विचार, आदर्श मनोभाव विश्वास परंपराएँ, राग द्वेष, रहन सहन, रीति रिवाज, अनुष्ठान क्रियाओं आदि का समन्वित अध्ययन लोकवार्ता शास्त्र का उद्देश्य है | लोक जीवन की सतत प्रवहमान सरिता की लहर में लोकवार्ता के तत्व उदभूत होते हैं | लोकवार्ता के संबंध में अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से विचार प्रस्तुत किये हैं | लेकिन उसे जनता की आशाओं और आत्मभावों से संबंधित मानते हैं |"[२०] वैसे ही डॉ. सत्येन्द्र लोक साहित्य पर अपनी राय प्रकट करते हैं- "प्रस्तुत लोकवार्ता के अवशेषों के अध्ययन का अर्थ है कि उस आदिम लोक प्रवृत्ति को समझा जाय जिसके परिणामस्वरुप लोकवार्ता प्रस्तुत होती है यह लोक प्रवृत्ति जब तक जहाँ जहाँ जिस मात्रा में विद्यमान मिलेगी वहाँ तब उसी परिमाण में लोकवार्ता भी मिलेगी | वे यह भी कथन करते हैं कि लोकवार्ता को जन्म देनेवाली लोक प्रवृत्ति को लोक मानस से संबंधित माना जा सकता है |"[२१] यही लोक साहित्य जे अवशेष आने वाली पीढियों के लिए प्रेरणादायी सिध्द होते हैं और जीवन को आगे मार्गक्रमित करती है | डॉ.कृष्ण उपाध्याय भी लोक साहित्य के विस्तार पर अपनी टिपनी देते हुए कहते है- "लोक संस्कृति के अंतर्गत जन जीवन से सम्बंधित जितने आचार विचार, विधि ि-षेध, विश्वास, प्रथा परंपरा, धर्म मूढाग्रह अनुष्ठान आदि वे सभी आते हैं | अत: लोक संस्कृति शब्द फोकलोर के व्यापक तथा विस्तृत अर्थ को प्रकाशित कर-ने में सर्वथा समर्थ है |[२२] स्पष्ट है कि लोकसाहित्य संपूर्ण मानवजाति तथा पशु पक्षी जीव जन्तु आदि का लेखा जोखा रखनेवाला साहित्य है |

लोक साहित्य को मूलरुपसे किसी रेखाओं या भागों में विभाजित नहीं कर सकते हैं | क्योंकि यह साहित्य मौखिक रुप में पाया जाता है | और जीवन विविध रंजो का प्रकटीकरण होता है | इस संदर्भ में डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय लिखते हैं- "लोकसाहित्य का क्षेत्र मानव समूह के विविध पक्षों, वर्गों, जातियों एवं विविध वर्गों के मनुष्यों को आनंद लाभ कराने वाला विशाल वाड्.मय का रुप है | साधारण जनता जिन शब्दों में गाती है, रोती है, हँसती है, खेलती है, उन सबको लोकसाहित्य के अंतर्गत रखा जा सकता है | लोक साहित्य की व्यापकता मानव के जन्म से लेकर मृत्यु

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तक है | तथा स्त्री पुरुष, बच्चे, जवान एवं बूढे लोगों की साहित्यिक संपत्ति है |"[२३] इससे स्पष्ट हो जाता है कि लोक साहित्य का वर्गीकरण कैसे किया जा सकता है | फिर भी विद्वानों द्वारा लोक साहित्य को वर्गीकृत करने की कोशिश हुयी है | डॉ. डी. एन. पटेल इस संदर्भ में लिखते हैं- "लोक साहित्य सामान्य जनता के हृदय के निश्चल भावों की अभिव्यक्ति होती है | लोक साहित्य की यह विशेषता है कि जन सामान्यों के अनुभूति की अभिव्यक्ति होती है | लोज साहित्य की यह विशेषता है कि जन सामान्यों के अनुभूति की अभिव्यक्ति स्वबोली में होती है | भावों ज ा मृदु ज ंपन गीतों के माध्यम से फूट पडता है | कहानियाँ सुनना, नाटक खेलना देखना ग्रामीण जनों के मन बहलाव ज ा साधन है | अनुभवाश्रित नीतिवचन, लोकोक्तियाँ अनायास होनेवाली भावाभिव्यक्ति है | शुध्द परिक्षण एवं प्रदर्शन हेतु चलने वाली पहेलियाँ, शौर्यगान हेतु प्रचलित लोकगाथा, शुभ अशुभ एवं अस्तित्व रक्षा हेतु चलनेवाले तंत्र मंत्र, टोने टोटके आत्मशांति हेतु प्रचलित भजनादि लोकसाहित्य की अमूल्य निधी है |"[२४] अन्त: लोक साहित्य को ऐतिहासिक और विवरणात्मक दृष्टि से उसका वर्गीकरण कर सकते हैं | जो मौखिक लोकसाहित्य प्राप्त है उसका विवेचन ज र ज ाल सीमा समय के आधार पर विवेचन होता उसे ऐतिहासिक विवेचन कह सकते है और लोक साहित्य की परंपराओं का विश्लेषण होता है उसे विवरणात्मक वर्गीकरण कह सकते हैं |

लोकसाहित्य को लोक विश्वास, रीति-रिवाज, लोक कथा, लोकगीत, कहावतें मुहावरें, पहेलियाँ आदि भागों में वर्गीकृत करते हैं- लोक गीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोक सुभाषित आदि |"[२५] इसी से मिलता जुलता रुप डॉ. शकुंतला वर्मा छत्तीस गढी लोक साहित्य का विभाजन करती है- "लोक गीत, लोक कहानी कहावतें, मुहावरें, पहेलियाँ |"[२६] अत: डॉ सत्या गुप्त ने लोक साहित्य को बडे विस्तारपूर्वक विवेचित ज िया है- "अध्ययन की सुविधा एवं सुव्यवस्थितता के लिए सामग्री जिनमें प्रचलित है उन व्यक्तियों के अवस्था भेद को आधार मान खडी बोली लोक साहित्य का स्थूल वर्गीकरण दृश्य एवं विभागों में प्रस्तुत किया है | दूश्य में लोक नाट्य, संगीत नौटंकी सोरट, भगत, रामलीला तथा श्रव्य में लोक कहानियाँ लोकोक्तियाँ, चुटकुले, लोकगीत, लोकगाथा, पहेलियाँ लघुछंद कथा को गिनाती है | अवस्थानुरुप बाल लोक साहित्य, युवक युवतियों का तथा वृध्दों का लोक साहित्य इन तीन वर्गों में विभाजित करती है |"[२७]

स्पष्ट है कि हमारी दृष्टि में लोक साहित्य को बडी सरलता से विभाजित करना बडा कठिन कार्य है क्योंकि सभी मौखिक साहित्य का शोध करना दुष्कर कार्य है | लेकिन फिर भी अध्ययन सुविधा के लिए गुर्जर लोक साहित्य ज ो इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है- लोक कहानी लोकगीत, लोक नाट्य, लोकगाथा, लोक सुभाषित पहेलियाँ आदि |

मनुष्य जाति की परंपरा जितनी प्राचीन है उतनी ही प्राचीन लोक साहित्य की परंपरा प्राचीन है | क्योंजि म-नुष्य जन्म के साथ उसकी कथाएँ भी निर्माण हुयी है | जैसे "ऋग्वेदकालीन जन समाज भी आज की भाँति विवाह जे

अवसर पर गीत गाता था | चरवाहे भी वन में पशु चराते समय अपने कंठ से सुमधुर गीत गाकर वातावरण को मनमोहक बना देते थे | स्त्रियाँ भी दैनिक कार्यों को निपटाते समय गीत गाती थी | विषैले जंतुओं ज़े विष ज़ो मंत्रोच्चारण द्वारा उतारा जाता था तथा मृतात्मा की शांति हेतु प्रार्थना किया करते थे | ये सब गीतों के प्रचलन के ही प्रमाण कहे जा सकते हैं |"[२८] स्पष्ट है कि लोकसाहित्य की परंपरा बडी पुरानी है और वह हमेशा ब-ती रहेज़ी | लोकसाहित्य की परंपरा सामाजिक, धार्मिक, राजकिय तथा ऐतिहासिक दृष्टियों से भी महत्त्वपूर्ण होती है | क्योंकि इसी से समाज की गतिशीलता परिलक्षित होती है | इसकी पुष्टी के लिए लोकसाहित्य के ज्ञानी डॉ. नारायण चौधरी का विचार सराहणीय है वे कहते हैं- "किसी भी देश के राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन में लोक साहित्य का अपना महत्त्व होता है | यदि हम ध्यान पूर्वक लोक साहित्य की समूची रक्षा, खोज एवं छान बीन करें तो हमारे साहित्य एवं संस्कृति की रक्षा एवं वृध्दिही होगी | हमारे इस जन भाषा के जबानी साहित्य में धर्म, समाज, सदाचार, संस्कृति सम्बंधी अमृतमयी सामग्री के दर्शन होते हैं | इसमें हमारे गौरव एवं गरिमामय इतिहास के सूत्र हाथ लगते हैं तो भूगोल सम्बन्धी कुछ यथार्थ बातों का पता भी चलता हैं | वस्तुतः लोक साहित्य ऐसा साहित्य है जिसमें निर्भय होकर मुक्त गोता लगाने पर जीवन के लिए लाभप्रद एवं उपकरण अनमोल मोती सहजता ज़े साथ प्राप्त हो जाते हैं | यह ऐसा लोक रक्षक रुप है जिसके कारण हमें अपने देश की स्वर्णिम गौरव गाथा एवं संस्कृति का मौलिक इतिहास मिलता है और इसके बलबूते पर भावी सुनहरे लक्ष्य की ओर चलने के लिए हम बाध्य हो जाते हैं |"[२९]

स्पष्ट है कि लोक साहित्य बौध्द साहित्य तथा जातक कथाओं से भरा पडा है | वाल्मिकी रामायण में भी लोकगीतों की परंपरा रही है | महाज़वि ज़ालिदास ने भी लोककथाओं का सहारा लिया हैं भक्तिकाल में तो सभी कवियों तथा भक्तों ने इसका सहारा लिया है | डॉ. डी. एन. पटेल इस पर अधिक प्रकाश डालते हैं- "लोक साहित्य ज़ी केवल गीत विधा का ही संकेत एवं प्रचलन प्राचीन साहित्य से मिलता है ऐसा नहीं है अपितु लोक साहित्य की दुसरी एक विधा लोक कथाओं का प्राचीन परंपरा वेदों उपनिषदों में उपाख्यानों के रुप में विद्यमान है | ऋग्वेद और ज़ठोपनिषद में लोक कथाएँ मिल जाती है | संस्कृत साहित्य तो कथाओं का भंडार है | महाभारत में अनेक शिक्षाप्रद आख्यान है | जुणाढ्यकी बृहत कथा मंजरी, सोमदेव का कथा सरित्सागर नारायण पंडित का हितोपदेश लोक कथाओं ज़ा भंडार हैं इसके अलावा लोक साहित्य के अन्य अंग जैसे लोकोक्तियाँ, मुहावरें, पहेलियाँ आदि की परंपरा का विचार किया गया है |[३०] याने लोक साहित्य ज़ी परंपरा ऋग्वेद काल से लेकर शतकों की यात्रा कर मनुष्य जीवन में आज भी उसका अभिन्न महत्व बरकरार है | और हमेशा रहेगा | क्योंकि यह पीढी दर पीढी चलता रहता है |

लोकसाहित्य का ऐतिहासिज़ महत्व होता है | क्योंकि इतिहास जो शोध करता है उसकी बहुत सी सामग्री लोकसाहित्य से प्राप्त होती है | जैसे "विश्व और मानव की रहस्यमय पहेली को सुलझाने के लिएउसके प्राचीनतम रुपों की खोज के लिए और उसके यथार्थ स्वरुप को जानने के लिए जहाँ इतिहास के पृष्ठ मूक है, शिलालेख और

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ताम्रपत्र मलीन हो गये वहाँ उस तमसाच्छत्र स्थिति में लोक साहित्य ही दिशा-निर्देश करता है |"[३१] उसी प्रज ार लोज साहित्य का महत्व इतिहास के लिए सिध्द हुआ है | उसको डॉ. सत्येन्द्र भी उपयुक्त मानते हैं- "उधर लोकवार्ता के अध्ययन के लिए भी पुरातत्व और इतिहास बडे सहायक है | लोकवार्ता में अनेक नाम और अनेक घटनाएँ होती है, अनेक सुझाव तथा अनेक सुचनाएँ होती है | उसमें अनेक निर्माण स्तर होते हैं | इन सभी का उद्‌घाटन पुरातत्व और इतिहास के द्वारा ही हो सकता है |"[३२] लोकवार्ता के कारण ही आज तक इतिहास की पर्तें खुली है | जैसे मोहन जोदडों अजन्ता-एलोदा आदि | पुरातत्व विद्वानों ने भी हमेंशा लोकवार्ता के आधार पर कई शोध किये है | प्राचीन काल में म-नुष्य ज ा जा-न-पा-न रह-न-सहन, आवास खेती करने के साधन रीति रिवाज, देवी देवता, विश्वास, वास्तुकला, शिल्प आदि के लिए पुरातत्व वेत्ताओंने लोकवार्ता कार ही मार्गदर्शक हुए है | उसी प्रकार मनुष्य का शास्त्र जानने के लिए भी लोक साहित्य ज ा आधार बनाया जाता है | मनुष्य जीवन विविध रुपों को जानने के लिए समाज शास्त्री इसी को केन्द्र मानते हैं- इस कथन को डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय इस प्रकार व्यक्त करते हैं- "लोक साहित्य में जन जीवन का जितना सजीव, सच्चा और स्वाभाविक वर्णन उपलब्ध होता है, उतना अन्यत्र नहीं | सच तो यह है कि यदि किसी समाज का वास्तविक चित्र देखना अभिष्ट हो तो उसके लोक साहित्य का अध्ययन करना चाहिए | इन लोकगीतों, जाथाओं और कथाओं में मनुष्यों को मिलता हैं |"[३३]

धर्मशास्त्र भी लोकसाहित्य पर खडे है तथा लोक विश्वास के आधार पर ही मनुष्य जीवन यापन कर रहा है | रामायण महाभारत की कथाएँ लोक कथाओं के माध्यम से आज भी सामान्य ग्रामीण तथा अशिक्षित समूहों में जीवन्त है | धर्मशास्त्र एवं पुराण कथा, जातक कथाओं के द्वारा ग्रामीण समाज अपना मनोरंजन करता है |

विशिष्ट अंचलों, भूभागों की जानकारी भी लोक साहित्य में अन्तर्भूत रहती है | जैसे उस भू विशेष ज े लोजों ज ा जा-न-पान, अनाज, फसलें, पहनावा, घरों के रुप खेतों के आकार, जमीन अथवा मिट्टी उपजाऊपन, नदी--ाले, -जर-प्रदेश, प्रमुख शहर, वन व्यवसाय तथा प्रकार इनका वर्णन विस्तार के साथ मिलता है | विभिन्न स्था-न, -ामों ज े अध्ययन से मनोरंजन तो होता ही है, उसके साथ-साथ स्थानीय नामों के सामाजिक, धार्मिक आर्थिक, ऐतिहासिक ज ारण भी हाथ लगते हैं | लोक साहित्य में प्राप्त एवं लुप्त नामों वाले वन, मार्ग, शहर अथवा महानगरों का उल्लेख शोधसंधान तथा सांस्कृतिक उत्थान में सहायक होता है | इसी प्रकार भूगोल भी लोक साहित्य में प्राप्त जा-नज ारी विशेष ज ो समझने एवं संबंध जोडने में मदद करता है |[३४]

लोक साहित्य में ललित कलाओं का विशिष्ट स्थान है | क्योंकि मनुष्य गीत, संगीत, चित्र, वास्तु मूर्ति के बिना उसका जीवन अधूरा है | जंगलों, पहाडों, तथा अनचिन्हित वर्ग अपने जीवन की छोटी-छोटी कलाओं के साथ जीता है | जैसी, "कल का आदिम मनुष्य सामान्य रीति से कहानी गीत कह लेना आज वह उसके संस्कारित रुप काव्य की ओर आकृष्ट है | कल के उसके गीत सीधे-सीधे बोल, नृत्य तथा ढोल संगीत में ढले, कल की रंग रेखाओं

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

में अभिव्यक्त रुप-रुचि चित्र कला बनी | कल की झोपडी का लीपना-पोतना और सँवारना आधुनिक वास्तुकला में परिणत हुआ | बर्तन एवं गहनों में उपयोगिता के साथ-साथ सौंदर्य एवं कलात्मकता क अन्तर्भाव हुआ | नदी--नाले एवं घाटियों में रास्ता पार करने को उसके साधन और भावों को केन्द्रियता की उसकी भावुक तन्मयता ने स्थापत्य एवं मूर्तिकला को जन्म दिया |"[३५] स्पष्ट है कि आज जो भी वास्तुकला, चित्रकला, शिल्पकला या अन्य कलाओं में जो भी विकास परिलक्षित होता है उसकी जड इन लोक कलाओं में निहित है |

माँ बच्चों की पहली पाठशाला होती है | आज शिक्षा के कई वैज्ञानिक और तज्‍नीकी साधन उपलब्ध होते हुए भी ग्रामीण जन जाति पहला ज्ञान का बोध अपने परिवार और आसपास के वातावरण से सीखता है | बच्चा जब छोटा होता है तो वह अपने परिवार के सदस्यों के होठों की रेखाओं से कुछ सीखने की कोशिश करता है | बादमें कुछ थोडा बडा होने पर अपने छोटे-छोटे मित्रों से तथा दादा दादी, नाना नानी से सीखता है | याने परिवार से बच्चा बहुत सारी ज्ञान ज्‍ी परंपरा की रीति रिवाजों की संस्कारों की बातें सीखता है | लडकी के लिए तो उसकी शादी होने तक उसकी माँ उसके लिए सबकुछ होती है | जैसे "उदार जननी एवं सदगृहस्थ बनना भारतीय पुत्रियों का प्रथम व पुरातन उद्देश्य रहा है | बालिकाएँ जीवन के आरंभ से ही गुडियाँ के साथ खेल-खेल कर अपना मनोरंजन करती है और गृहस्थ के अनेक रहस्यों को अनायास सीख लेती है, समझ लेती है | जब सयानी होती है तो जीतों की दुनिया में पदार्पण करती है | यह संसार उन्हें प्रर्याप्त मात्रा में शिक्षित कर देता है | यही से उन्हें ऐसे असंख्य नुस्खे (योग) मिलते है जो भावी जीवन के लिए लाभप्रद एवं हितकर सिध्द होते हैं जिन बातों को ये गुड्डे गुडिया के रुप में कहती सुनती है उन्हीं से अपने भावी जीवन की दिशा निर्धारित करती चलती है |"[३६] स्पष्ट है कि यही लोकजीवन की सबसे बडी पूँजी है | जिसे मनुष्य जीवन भर सहेज कर जीता जाता है |

भाषा विज्ञान के लिए कोई भाषा बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं जितनी किसी भाषा की बोली या उपबोली | क्योंकि बोली से ही भाषा के स्त्रोत मिलते हैं | किसी भी भाषा के शब्द अर्थ लोकोक्तियाँ, मुहावरे पहेलियों को समझ ाने के लिए लोकसाहित्य को जानना अत्यावश्यक हो जाता है | इसी महत्व को पं. रामनरेश त्रिपाठी स्पष्ट कहते हैं- "लोक मानस की शब्द निर्माण शक्ति की परख प्राय: क्रिया विशेषण बनाने में सरलता हो जाती है | जोर से गिरने के लिए 'धडाम से गिरा अधिक सार्थक एवं स्वत: बोधक है आदि | यदि हम किसी ग्रामीण जन को बोलते सुने तो हमें सहज ही ज्ञात हो जायेजा ज्‍ि वह कितने ही ऐसे शब्द प्रयोज में लाता है जो भारतीय वातावरण में पनपे है यथा पौन (पवन) पौरुष वार (वारि) आदि ऐसे शब्द हैं जिनके अन्तस में भारतीय वातावरण हिलोरें ले रहा है | एक सरल विवेचन से हम यह देख पायेंगे कि लोकभाषा शिष्ट भाषा से अधिक संपन्न और बलवती है | उसके अध्ययन से हमारी भाषा समृध्द और सरल भी बनेगी |"[३७] इस प्रकार भाषा वैज्ञानिकों के लिए लोक बोली सहायक सिध्द होती है| तथा विभिन्न शास्त्रों कलाओं के लिए भी लोक साहित्य तथा बोली सार्थक साबित होती है |

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उसी प्रकार लोक साहित्य में संस्कृति का अपना महत्व होता है | किसी भी देशकी संस्कृति को, उसकी विरासत को जानना और समझना हो तो लोक संस्कृति के माध्यम से समझ सकते हैं | डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल इस संदर्भ में टिप्पणी करते हैं- ब्रह्मा के समान यदि भारतीय जीवन को चतुष्पाद माना जाय तो उसके एकपाद की प्रतिष्ठा वेद या शास्त्रीय चिन्तन में और त्रिपाद की अभिव्यक्तिलोक क्रियाशील जीवन में पायी जाती है | अन्त-एव भारतीय शास्त्र की व्याख्या का सवोत्तम क्षेत्र यहाँ लोक जीवन है | आज भी लोक के जीवन का वार्षिक सत्र अनेक मंगलात्मक विधानों और आचारों से सम्बंध है | लोक में भरे हुए पर्व और उल्लास लोक नृत्य, लोकगीत, लोककथाएँ, वृत्तों का अवदान कहानियाँ सवंत्सर का रुप संवारने वाले अनेक व्रत और उपवास, देव यात्राएँ और मेले आदि से भारतीय संस्कृति अपना अमिट स्पन्दन प्राप्त कर रही हैं |"[३८]

निष्कर्ष रुप से कह सकते हैं कि लोक साहित्य का महत्व अनन्य साधारण है लोक साहित्य समाज की तथा राष्ट्र की संपत्ति हैं हमारी राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत है |

लोक साहित्य के इतिहास पर अगर हम नजर डाले तो पता चलता है कि हमारे यहाँ मौखिक लोककला प्राचीन काल से चली आ रही है | लेकिन उसज्ञा अध्ययन विश्लेषण पुराने जमाने में कोइ सका नहीं | और कभी संकलन की बात भी नहीं सोची | स्पष्ट है कि अंग्रेज भारत आने पर ही इस पर अध्ययन और विश्लेषण होता दिखाई देता है | क्योंकि अंग्रेज जानते थे कि यहाँ शासन करना है तो इनको जानना समझना होगा और यह लोक संस्कृति और लोकसाहित्य को समझने के बिना नहीं होगा | इसके प्रमाण हमें हमारे पुरातत्व विभागों में प्राप्त होगें | सर्व प्रथम १८ वी शती में सर विलियम जोन्स न बंगाल में एशियाटिक सोसायटी नामक संध्या द्वारा यह ज ार्य प्रारंभ ज्ि या | दूसरा तथ्य यह भी है कि जिन-जिन प्रदेशों में अंग्रेज अधिकारी थे | उन्होंने भी इस कार्य को अंजाम दिया है | वैसे ही ईसाई मिशनरी द्वारा भी यह कार्य किया गया है | इस संदर्भ में लोक साहित्य के अध्ययन हेतु जिन संस्थाओं तथा व्यक्तियों का योगदान रहा है वो इस प्रकार है |

ज र्नल टाड :

इन्होंने 'ऐनल्स डेज' नामक ग्रंथ में दक्षिण भारतीय जन जीवन का विस्तार से वर्णन किया है |[४०] बाद में 'इंडियन ऐटिक्वेरी' नामक पत्रिका में कई विद्वानों ने अपने लेख प्रकाशित किय जिसमें मुख्य रुप से जी एच डेमेंट ने 'बंगाली' फोकलोर फ्राम दिनाज-पुर' का प्रकाशन करवाया १८८२ में तोरुदत्त ने 'ऐशंट बैलेडस एण्ड लिजेण्डस आफ हिंदुस्था-न' ज्ो लिखा | १८८३ में 'फोक टेल्स ऑफ बंगाल' और 'बंगाल पीजेंट लाईफ' भी लिजा | १८८४ में आर.सी. टेम्पुल ने 'लिजेंडस आफ दि पंजाब' तथा १८८५ में स्टील ने 'वाईल्ट अवेक स्टोरीज', नरेश शास्त्री -ने 'फोकलोर इन दि सदर्न इंडिया', ई.जे. रॉबिन्सन ने 'टेल्स एण्ड पी-एम्स ऑफ साउथ इंडिया' नामज ग्रंथों ज ा प्रज ाश-न ज राया |[४१] इन विदेशी विद्वानों ने भारतीय लोक साहित्य को खोजने और उसे प्रकाशित करने से महत्वपूर्ण कार्य

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

किया है | तथा बाद ज े वर्षा में भारतीय विद्वान भी इसमें जुड गये और अनेक पत्रिकाओं तथा ग्रंथों में इस शोध कार्य को प्रकाशित किया गया हैं उसी समय में हिन्दी की सारी बोलियों का मौखिक लोकसाहित्य था उसे भी प्रज ाश में लाने का कार्य गिरन्तर होता रहा है | इस सन्दर्भ डॉ. डी. एन. पटेल लिखते हैं महाराष्ट्र में १८६८ में प्रकाशित 'ओल्ड डेक्कन डेज' नामक पुस्तक के साथ ही लोक साहित्य के अध्ययन का श्री गणेश हुआ समझा जाता है | यही से मराठी के अनेक विद्वानों ने अपनी विभिन्न रचनाओं एवं संज लनों द्वारा लोक साहित्य के अध्ययन को पुष्ट किया है | प्रस्तुत अध्ययन गुजराती की उपबोली गुर्जरी का है जो अब तक नहीं हुआ था | इस प्रकार लोक साहित्य का प्रारंभिज इतिहास पाश्चात्य नामों के साथ जुडा है तथा लोक साहित्य का विकास अध्ययन अनुशीलन भारतीय नामों ज े साथ जुडा हुआ हम लेखते हैं |"[४२] स्पष्ट है कि इन विभिन्न विद्वानों द्वारा यह महनीय कार्य भारतीय परंपराओं तथा विभिन्न संस्कृतियों का लेखा जोखा हमें प्राप्त होता है | जिससे हमारी प्राचीन परंपराओं का पता चलता है | इतिहास हमारी विरासत से आगे हम अपनी विकास यात्रा करते है |

लोक साहित्य को संकलित करना बडा ही दुष्कर कार्य है | क्योंकि लोक साहित्य विभिन्न भागों तथा क्षेत्रों में बिखरा पडा होता है | यह मौखिक होने के कारण इसे लिखित रुप में प्राप्त करना बडा ही कठिन कार्य होता है | इस विषय पर जिसे जिज्ञासा हो वही इसे कर सज ता हैं | कभी-कभी संकुचित मनोवृत्ती के कारण भी इस प्रकार साहित्य प्राप्त करने में मुश्किल होती है | कभी-कभी पुनरावृर्ती का भी डर लगा रहता है | कुछ लोक अपना मौखिकी देने से असमर्थता प्रकट करते हैं | उसी प्रकार कुछ स्त्रियाँ परदा भी करती है इस कारण वे सामने आने से कतराती हैं | लोकगीतों को जा-ननेवाले भी आजकल बडे अभाव से मिलते हैं | छोटे-मोटे कलाकार अपनी रोजी रोटी के कारण भी अपना पेशा छोडकर अन्य पेशे में चले जाते हैं स्पष्ट है कि इन समस्याओं से रुबरु होकर लोक साहित्य का शोध किया जाता है | इस संदर्भ में डॉ. सत्येन्द्र अपनी समस्याएँ प्रस्तुत करते हैं "परस्पर मेल -न मिल-ना मेरे ज ाम ज ो महत्त्व नहीं | संकलन पर गवैयों की अश्रध्द | गायक का मिजाज | गायक कलाकार की व्यावसायिज वृत्ति संज ल-न ज र्ता की शारीरिक असुविधाएँ | गायक को उचित वातावरण न मिलना | क्षेत्र की भाषा विषयक, संस्कृति विषयक अज्ञान | अनुष्ठान में गैर को प्रवेश निषेध | अवसर छोड अनन्य न कहने का वर्जन | व्यावसायिकों को प्रतिद्वतिता का भय |[४३] स्पष्ट है कि इन विभिन्न समस्याओं से गुजरकर लोकसाहित्य संकलन किया जाता है |

लोकसाहित्य संकलन की समस्याओं का निराकरण करते समय विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि हमें किसी चीज ज ो जानने की जिज्ञासा है तो उसे करने की लगन आप में होनी चाहिए | इस संदर्भ में डॉ. सत्येन्द्र लिखते हैं-

१. क्षेत्रीय अभ्यास के लिए एक व्यक्ति के स्थान पर एक टोली ही उचित रहती है | जिसमें लोकवार्ता के विविध अंगों की सामग्री एकत्र करनेवाले पृथक पृथक संग्राहक हो टेपरेकार्डर और फोटोग्राफर भी साथ हो तो अच्छा हो |

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

२. यह टोली उस क्षेत्र के भूगोल, इतिहास एवं संस्कृति से पूर्ण परिचित हो | निर्देश पुस्तिका प्रश्नमाला जी तैयारी, टेपरिकार्डर से लिपिबध्द करने का अभ्यास, लोकवार्ता की विभिन्न प्रज ार जी सामग्री जे वर्जीज रज ज ा ज्ञा-न, चित्रकला, फोटोग्राफी आदि बातों का ज्ञान भी होना आवश्यक होता है | उस क्षेत्र की भाषा ज ा ज्ञान तो अत्यन्त आवश्यक होता है |

३. लोकवार्ता, नृत्य विज्ञान, पुरातत्व, लोकसाहित्य और उसकी विभिन्न विधाओं से संबंधित सामग्री का पृथज -पृथज संग्रह ज र-ना |

४. सर्वेजज जे संपर्ज में सहायज व्यक्तियों, सामग्री देनेवाले पात्रों, स्त्रियों के आभूषणों प्रेत पूजा, विश्वासों, लोकचित्रों, लोकानुष्ठान, लोक दस्तकारी आदि से सम्बध्द जानकारी का विवरण तैयार करना चाहिए |

५. लोकवार्ता विषयक सामग्री का संग्रह संकलन करनेवाले के लिए आवश्यक योग्यताओं में सामान्य और विशेष दो वर्ग बताते गये है | सामान्य योग्यता के वर्ग में लोक साहित्य में रुचि लोक साहित्यज्ञों से संग्रह ज र-ने जी ज ुशलता, त्वरित लेखन अभ्यास का अभ्यास समाविष्ट किया गया हे | विशेष योग्यता वर्ग में टेप रिकार्डर के प्रयोज ज ा यान अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि वैज्ञानि-ज वर्जमाला ज ा ज्ञान, आन्तर्राष्ट्रीय नृत्यरुपों का ज्ञान और भारतीय या आन्तर्राष्ट्रीय संगीत स्वर लिपी का ज्ञान समाविष्ट किया गया |[४४]

इन सारी बातों का ध्यान रखने से लोक साहित्य संकलन की सारी समस्याओं का हल हो सकता हैं | किसी भी क्षेत्रीय लोक साहित्य का अध्ययन करते समय भिन्न भिन्न विषयों को संकलित करना महत्त्वपूर्ण होता है | ज ि सी समूह और उसके जीवन यापन को परिपूर्ण तरिके से समेटकर उसको प्रस्तुत करना यह बडी उपलब्धि मानी जा सकती हैं आधुनिक समय में शोधकार्य करने हेतु कई तकनीक और विज्ञान काम आता है | गुर्जर बोली का साहित्य वर्षों तक बोझल रहा है | इसका प्रमुख कारण यह भी है कि यह क्षेत्र सीमावर्ती क्षेत्रों में होने के कारण सामाजिक, राजकीय, सांस्कृतिक तथा धार्मिक दृष्टि से इसका सम्बन्ध गुजरात से जुडा रहा है |इस क्षेत्र में बसनेवाले लोज भी इसे उपेक्षित मानते रहे है | यह वर्ग खेती प्रधान होने के कारण भी इसकी उपदेयता उन्हें ज्ञा-न नहीं हुई | इस बोली पर अबतक छिटपुट ही शोध कार्य हुए है | तथा लोक साहित्य पर विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए हुए वर्गीकरण के आधार पर हमने इसे इस तरह वर्गीकृत करने की कोशिश की है जो इस प्रकार है |

गुर्जर लोक गीत, गुर्जर लोककथा, गुर्जर लोकनाट्य और गुर्जर लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ, मुहावरे आदि |

स्पष्ट है कि जुर्जर बोली का विस्तार तीन राज्यों की सीमावर्ती क्षेत्रों में पाया जाता है | तथा उसकी परंपरा बहुत प्राचीन है क्योंकि गुजर लोग कई स्थानों से यात्रा कर महाराष्ट्र के इन क्षेत्रों में आकर बसे हैं | ज ि सी भी बोली तथा समूह के रीति रिवाज, त्यौहार, उत्सव, जीवनयापन के तौर तरीके अपने आप में महत्त्वपूर्ण होते हैं | गुर्जर बोली

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शतकों वर्ष की यात्रा कर आज भी बराबर बनी हुयी है | इन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक अनुष्ठान जैसे के वैसे बनाये रखे है | अत: गुर्जर बोली ज ा लोक साहित्य सर्व समावेशक होकर भी अपने आप में अनुपम है |

संदर्भ सूची :-

डॉ. महेंद्र रघुवंशी - छठे दशक के हिन्दी उपन्यासें में लोक संस्कृति, प. ३८
डॉ. रविन्द्र भ्रमर : हिन्दी भक्ति साहित्य में लोकतत्व - पृ.३
डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी- जनपद, वर्ष-१ अंक-१, पृ. ६५
डॉ. श्याम परमार : हिन्दी का प्रदेशिक लोक साहित्य शास्त्र, पृ. ९-११
डॉ. नन्दलाल कल्ला : हिन्दी का प्रदेशिक लोक साहित्य शास्त्र, पृ. १८८-१८९
पं. विद्यानिवास मिश्र : लोक और लोक का स्वर-११-१२
डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल- संम्मेल-न पत्रिज ा- लोकसंस्कृति विशेषांक-पृ. ६५
डॉ. सुरेश गौतम- लोक साहित्य, पृ. ६
डॉ. सुरेश गौतम- लोक साहित्य, पृ. ६
डॉ. सुरेश गौतम- लोक साहित्य, पृ. ६
बा वृ-दाव-नदास - अभिनन्दन ग्रंथ, पृ. ५०९-५१०
डॉ. सत्येंद्र - लोक साहित्य विज्ञा-न, पृ. ४-५
डॉ. उप्रेती-लोक साहित्य के प्रतिमान, पृ. १९
लीच मारिया स्टैडर्ड डिक्शनरी ऑप फोकलोर भाग- १, पृ. ३९८ | Folklore imrises traditional creations of poopks primitive and civilized पृ. ३९८
लीच मारिया स्टैडर्ड डिक्शनरी ऑप फोकलोर भाग- १, पृ. ३९८ | Folklore imrises traditional creations of poopks primitive and civilized पृ. ३९८
लीच मारिया स्टैडर्ड डिक्शनरी ऑप फोकलोर भाग- १, पृ. ३९८ | Folklore imrises traditional creations of poopks primitive and civilized पृ. ३९८
I m Espinoza-the science of folklore is that branch og human knowledge the collects classifies and studies in the scientific manner the material of folklore in order to interpret the life and culture of peoples acrose the age Pg.३९९
I m Espinoza-the science of folklore is that branch og human knowledge the collects classifies and studies in the scientific manner the material of folklore in order to interpret the life and culture of peoples acrose the age Pg.३९९
डॉ. श्याम परमार : मालवी लोक साहित्य- प्रास्ताविक
सत्व्रत अवस्थी-लोकसाहित्य की भूमिज ा, पृ. १०
डॉ. सत्येंद्र- लोक साहित्य विज्ञा-न पृ. ३०-३१
डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय- हिंदी साहित्य का वृहत इतिहास भाग १६, पृ. ११-१२
डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय- लोक साहित्य की भूमिका, पृ. २४
डॉ. डी. एन. पटेल- गुर्जरीलोक साहित्य, पृ. ५७
डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय- लोक साहित्य की भूमिका, पृ. ९१
डॉ. शकुन्तला वर्मा- छतीसगढी लोक जीवन और लोक साहित्य का अध्ययन, पृ. ८९
डॉ. सत्य गुप्त-खडी बोली का लोक साहित्य की भूमिज ा से, पृ. ८-९
ऋग्वेद- १०/८५/६ १०/१४९/३-९ १/१९/१-१९६ सं. श्रीराम वर्मा ५ वॉ सरंज बरेली

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

डॉ. नारायण चौधरी- लोक साहित्य के स्वरुप का सौन्दान्तिक विवेचन पृ. २०
डॉ. डी. एन. पटेल- गुर्जर लोक साहित्य, पृ ६२
डॉ. शंकरलाल यादव- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, पृ. ४३
डॉ. सत्येंद्र-लोक साहित्य विज्ञा-न, पृ. ७१
डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय- लोक साहित्य की भूमिका (द्वि-संस्ज रज), पृ. ३२३
डॉ. नारायण चौधरी- लोकसाहित्य के स्वरुप का सौन्दान्तिक विवेचन, पृ. २९
डॉ. नारायण चौधरी- लोकसाहित्य और पावरी भाषा- पृ. ३१
डॉ. रामनिवास शर्मा- लोक साहित्य और लोक संस्कृति, पृ. ३१
डॉ. शंकरलाल यादव- हरियाजा प्रदेश का लोक साहित्य, पृ. ४७
उदधृत- डॉ श्रीराम शर्मा- लोक साहित्य सिध्दान्त और प्रयोग-पृ. ३२४
डॉ. उपाध्याय : लोक साहित्य की भूमीका, पृ. ३२
डॉ. डी. एन. पटेल : गुर्जरी लोक साहित्य, पृ. ६६ से उद्धृत
इंडियन एंटिक्वेरी-भाज-१, पृ. ९७-१०३
डॉ. डी. एन. पटेल : गुर्जरी लोक साहित्य, पृ.६८
डॉ. सत्येंद्र- लोक साहित्य विज्ञा-न, पृ. १७-१८
डॉ. सत्येंद्र- लोक साहित्य सिध्दान्त और प्रयोग, पृ. ३८

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies